V2Z2N8

पाठ – आठ

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम – उद्गम और अन्त

19 वीं शताब्दी के दौरान भारतवासियों में राष्ट्रीय चेतना का उदय भारत के ऐतिहासिक विकास के अत्यन्त महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक है। भारतवासियों की भारतीय होने की भावना युगों पुरानी थी। इस तरह के राष्ट्रवाद का उदय कैसे हुआ ? इसके कई कारणों में से प्रमुख बातें इस प्रकार हैं।

भारत पर अंग्रेजों की व्यापक विजय के कारण भारतवासियों को अपनी सत्ता के अधीन रखकर शासन किया। अंग्रेजों ने अपनी नीति के आधार पर टेलीग्राफ और डाक व्यवस्था लाकर उनका औपनिवेशिक नियंत्रण बनाए रखा। भारत के बाजारों में उनका तैयार किया सामान लाकर भारतीय आर्थिक अवस्था पर शोषण नीति चलाई। अंग्रेजों ने भारत पर पाश्चात्य शिक्षा ला दी जिससे भारतवासियों के ज्ञान की वृद्धि तो हुई। समय के अनुसार रुचि और चाल-चलन की दृष्टि से शरीर भारतीय होकर भी मन अंग्रेजों का हो गया। शिक्षित भारतीय यूरोप के सामाजिक विचारों को समझने लगे। प्लेटो, हीगल, कान्ट, अरस्तू आदि की कृतियों के द्वारा मुक्ति और स्वतंत्रता के विचारों का अध्ययन करने लगे। इस तरह शिक्षित भारतीय एक दूसरे के संपर्क में आए और जन समुदाय के बीच राष्ट्रीय चेतना का प्रचार करना शुरू किया। वास्तव में अंग्रेजी शिक्षा ने उस चिनगारी का काम किया जिसने भारतवासियों पर एक नए मोड़ अपनाने का मौका दिया।

विभिन्न सामाजिक, धार्मिक तथा अन्य सांस्कृतिक आन्दोलनों के माध्यम से भारत में राष्ट्रीय चेतना जागृत कराने का भरसक प्रयत्न किया। इससे बढ़कर समाचार-पत्रों तथा प्रेस ने भी बड़ी अच्छी भूमिका निभाई।

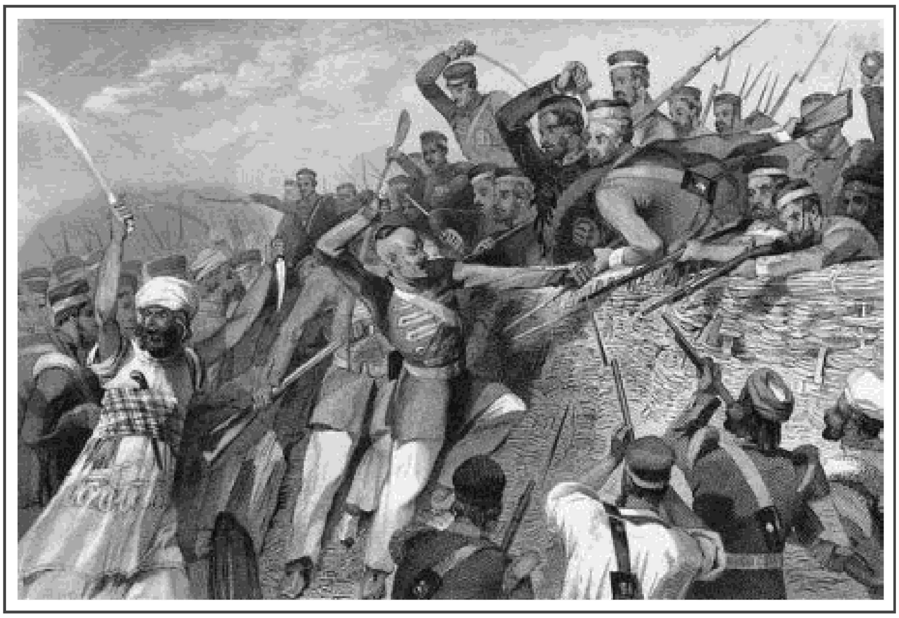

जब भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का विकास हुआ तब महात्मा गांधी का दक्षिण अफ्रीका से भारत-भूमि पर प्रादुर्भाव हुआ। गांधी के भारत आने के पहले भारत के कई मुख्य शहरों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन आयोजित किए गए। भारतीय कांग्रेस के प्रथम बीस साल के सम्मेलन में अग्रणी नेताओं की आशा अंग्रेज सरकार ने निराशा में बदल दी। अंग्रेजों ने अपने शासन में अमानवीय शोषण नीति अपनाई। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय शिक्षित वर्ग ने साधारण जनता के दिलों में राष्ट्रीय प्रेम उत्तेजित किया। बंकीमचन्द्र चट्टोपाध्याय के ' वन्दे मातरम' ने क्रांतिकारियों के दिलों में राष्ट्र के प्रति बलिदान की भावना जगाई ही नहीं , अपितु उन्होंने सक्रिय रूप से आत्मा उत्सर्ग की।

उस काल के प्रमुख नेताओं में बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल, लाला राजपट राय, अरबिन्दो घोष आदि नाम उल्लखनीय है। वे लोग उग्रवादी थे। इनके अलावा सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता आदि नरम मार्ग अपनानेवाले नेता भी थे। उनके विचार थे कि अंग्रेज सरकार भारतवासियों की माँगों को राजनैतिक विचार के आधार पर पूरी करेगी।

तत्काल, भारत के बाहर विश्व के अन्य स्थानों में घटी घटनाओं का गहरा प्रभाव भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर पड़ा। सन् 1896 में इथ्योपिया सैनिकों ने इटली पर संघर्ष कर जीत पाना, जापान द्वारा रूस पर आक्रमण, आयलैंण्ड द्वारा ब्रिटिश पर आन्दोलन छेड़ना आदि भारत के लिए एक बड़ी शिक्षा थी। इन सब ने भारतीय नेताओं की योजनाएँ मजबूत कर दीं।

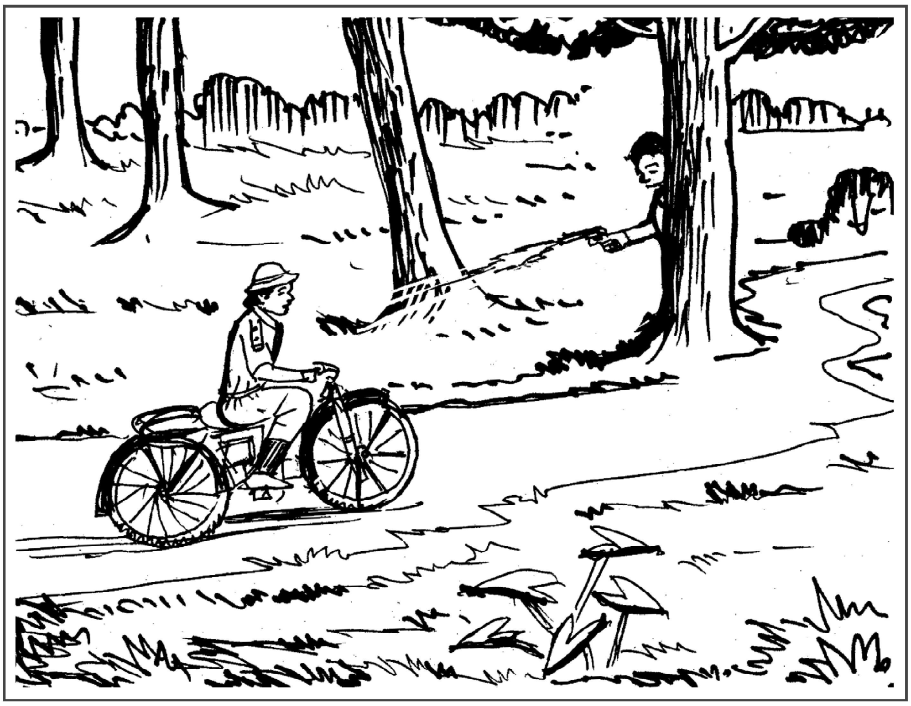

भारत भर में क्रान्ति की हलचल सन् 1857 के मार्च में बंगाल के बैरकपुर से हुई। वहाँ मंगल पाण्डेय नामक एक भारतीय सिपाही ने खुल्लमखुल्ला अपने अंग्रेज अधिकारी को गोली मार दी। अंग्रेजों ने तात्कालीन क्रान्ति को कुछ सालों के लिए दबा दिया। भारत में नरमपंथी और गरमपंथी की क्रान्ति की गतिविधि जारी रही। सन् 1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा किए गए बंगाल विभाजन से अंग्रेजों की 'फूट डालो और शासन करो ' नीति का रूप बिलकुल साफ हो गया। इस नीति ने सांप्रदायिक समस्या को कई गुना बढ़ा दिया। पूरे बंगाल में शोक छा गया। कई स्थानों में बैठकें हुईं। बंगाल

में यातायात तथा व्यापार का काम ठप हो गया। दुकानें बन्द थीं। इसके नेता थे सुरेन्द्र नाथ बेनर्जी, बिपिन चन्द्र पाल और अब्दुल रसुल। इस दिन को कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ने एकता और समभाव दिवस कहा। इससे लोगों में राष्ट्रीय भावना और तीव्र हो गई। स्वदेशी और बहिष्कार का कार्यक्रम और तेज कराया गया। नरम पंथी और गरम पंथी के नेताओं ने बंगाल विभाजन के विरुद्ध आन्दोलन किया। सन् 1905 को बनारस में अखिल भारत कांग्रेस अधिवेशन श्री गोपाल कृष्ण गोखले की अध्यक्षता में हुआ। दक्षिण भारत में भी विऑसी पिल्लाइ के नेतृत्व में स्वदेशी और बहिष्कार का आन्दोलन शुरू हुआ। स्कूल-कॉलेजों नें अंग्रेजी सामान का प्रयोग करना छोड़ दिया। सन् 1906 में दादाभाई नाओरोजी के नेतृत्व में कलकत्ता में हुए अधिवेशन में गरम पंथी और नरम पंथी दोनों के विचारों में अन्तर आने लगा। यह अधिवेशन स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रसंग में एक मुख्य ऐतिहासिक प्रसंग हुआ।

सूरत में हुए सन् 1907 के अधिवेशन में भी दोनों पंथियों के नेताओं के बीच काफी मतभेद हुआ। नरम पंथी ही के नेता खुले आम आन्दोलन में भाग लेते रहे। सन् 1907 में लाला लाजपत राय को पकड़ कर बर्मा के जेल में रखा गया। बाद में उन्हे छोड़ दिया गया। फिर सन् 1908 में बिपिन चन्द्र पाल को छः महीने के लिए पकड़ कर कारागार में रखा गया। बाल गंगाधर तिलक को भी पकड़ कर बर्मा के जेल में रखा गया।

प्रथम विश्व महायुद्ध के दौरान क्रान्तिकारी गतिविधियाँ बर्लिन में केन्द्रित थीं। सन् 1915 में वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, लाला हरदयाल तथा भूपेन्द्र दत्त के नेतृत्व में विदेशी कार्यालय की सहायता से भारत को स्वतंत्र कराने की आशा में जर्मन में आई.आई.सी. अर्थात इण्डियन इण्डिपेण्डेन्स कमेटी की स्थापना की गई। दिसम्बर, सन् 1915 में राजा महेन्द्र प्रताप, ओबैदुल्लाह सिंधी तथा बर्कतुल्लाह ने काबुल में अंतरिम सरकार का गठन करने की तैयारी की। इसे जिमरमैन योजना के नाम से जाना

गया। अन्त में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग को स्थापना हुई। यह लीग बहुत आसानी से साम्प्रदायिक और पृथकवादी दृष्टिकोण का शिकार हो गयी।

मार्ली-मिण्टो सुधार ने भारतीय प्रशासनिक ढाँचे में परिवर्तन लाने की घोषणा की। इस सुधार से नरम पंथी नेताओं को बड़ी निराशा हुई क्योंकि इसने हिन्दू और मुसलमानों के बीच फूट डालने का प्रयत्न किया। सन् 1911 को दिल्ली में आयोजित शाही दरवार में ब्रिटिश साम्राज्य के राजा जर्ज पंचम और उनकी महारानी शामिल थे। मुजफरपुर में खुदिराम बोस तथा प्रोफुल्ला चाकी ने आदालत में बम फेंके। चाकी ने आत्महत्या की और खुदिराम बोस पर न्यायिक जाँच करने के बाद उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया। कलकत्ता के एक घर में छापा मारकर पुलिस ने अरबिन्दो घोष और उनके भाई वीरेन्द्रघोष को पकड़ा। फिर भी भारत के कोने-कोने में उग्रवाद का काम जारी रहा।

भारत के बाहर विदेशों में भी स्वतंत्रता आन्दोलनकारी की गतिविधि कम नहीं थी। यूरोप के उग्रवादियों से सम्पर्क रखकर भारत की स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी। उत्तर अमेरिका में उन्होंने भारतकी मुख्य भाषाओं में अपना मुखपत्र 'गदर' नामक पत्रिका निकाली।

आगे बढ़कर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और क्रान्तिकारियों के कदम बदले। स्वतंत्रता-संघर्ष के इतिहास में नया पृष्ठ खुला और गांधी जी का आविर्भाव हुआ। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में पन्द्रह साल रहकर अंग्रेजों का वहाँ के लोगों पर किए अत्याचार को रोका। बाद में उनके भारत आने से स्वतंत्रता-संघर्ष में एक परिवर्तन आया। उनके दो मजबूत विचार हैं – अहिंसा और सत्याग्रह। इन दोनों हथियारों द्वारा चम्पारन जिले में नील की खेती करनेवालों की समस्या का सविनय हल किया गया। गुजरात में खेड़ा के किसानों के मामले में भी सत्याग्रह द्वारा सरकार के साथ समझौता कराया गया। इस दौरान सरदार बल्लभ भाई पटेल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण नेता के रूप में उपस्थित हुए।

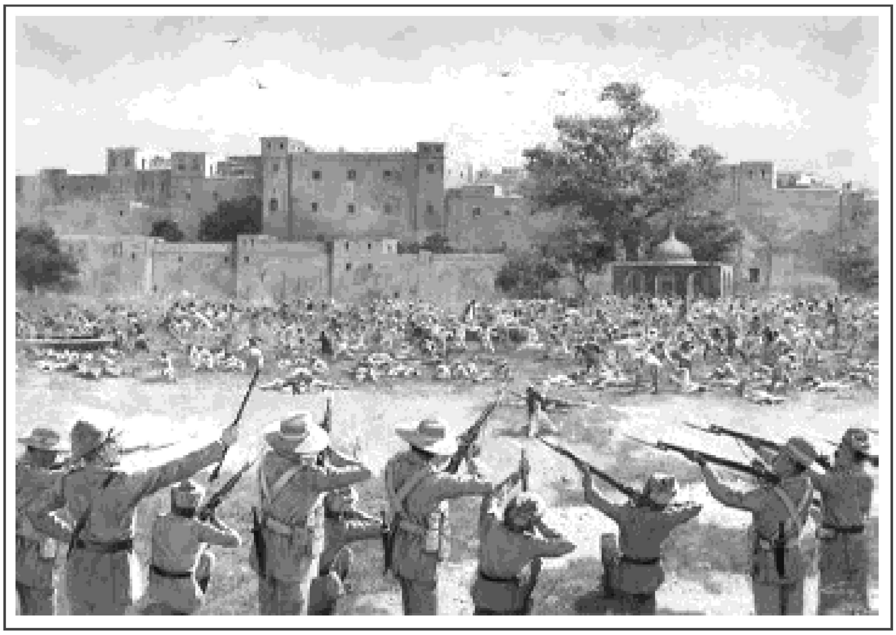

सन् 1920 में गांधीजी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया। इस आन्दोलन की पृष्ठभूमि की तैयारी प्रथम विश्व युद्ध, रौलट विधि, जालियाँवाला बाग नर संहार तथा मॉण्टेग्यू चेम्पफॉर्ड सुधार आदि पर आधारित होकर की। परन्तु इस आन्दोलन से भारत की स्थिति इतनी बेकाबू हो गई कि गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा में पुलिस में पुलिस ने कांग्रेस स्वयं-सेवकों पर गोली चलाई। इसके उत्तर में क्रोधित भीड़ ने वहाँ की पुलिस चौकी पर आग लगा दी; उसमें बाईस पुलिस कर्मचारी जिन्दा जल कर मर गए। इस परिस्थिति में गांधीजी ने यह आन्दोलन कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया।

सन् 1929 में लाहौर में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुए कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव रखा। पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति हेतु सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरंभ करने के लिए गांधी जी पर नेतृत्व का भार सौंपा गया। रावी नदी के तट पर जवाहरलाल नेहरू ने भारत का तिरंगा झण्डा फहराया। 12 मार्च, 1930 को हुए सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने भारत में एक गंभीर रूप लिया और सरकार को अन्त में

समझौता करने को बाध्य किया। लंडन में नवम्बर 1930 से जनवरी 1931 तक प्रथम गोल मेज सम्मेलन का आयोजन हुआ। उस समय कांग्रेस के अधिकांश नेता जेल में थे। इसलिए देशी रियासतों के प्रतिनिधि, मुस्लिम लीग नेता, दलित वर्ग, सिक्ख तथा अन्य लोगों ने एकत्रित होकर काम किया। इसी बीच शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को लाहौर षडयंत्र के इलजाम में फाँसी की सजा दी गई।

सन् 1941 में सुभाष चन्द्र बोस के जापान पहुँचने के बाद रासबिहारी बोस के नेतृत्व में कप्तान मोहन सिंह ने जापानियों द्वारा पकड़कर रखे भारतीय ब्रिटिश फौजों को मिलाकर भारत की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। भारत के लोगों के सक्रिय एवं पूर्ण सहयोग से अंग्रेज सरकार परेशान थी। द्वितीय विश्व युद्ध में भारत के दक्षिण-पूर्वी सीमा पर जापान का खतरा बढ़ रहा था। नेताजी सुभाष ने आजाद हिन्द फौज में नई जान दी। उन्होंने 'दिल्ली चलो' का नारा लगाया। लेकिन 1945 में जापान के दो शहरों– हिरोशिमा और नागासाकि पर एटम बम गिराने से जापान की हार हुई। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु भी एक नाटकीय ढंग से हवाई जहाज दुर्घटना में ही गई। अन्त में ब्रिटिश सरकार को बाध्य होकर भारत को 15 अगस्त, 1947 की मध्य रात्रि को स्वतंत्रता प्रदान दी करनी पड़ी।

कठिन शब्दों के अर्थ–

दौरान	=	दौर, चक्र।
राष्ट्रवाद	=	राष्ट्रीय स्वतंत्रता की नीति।
औपनिवेशिक	=	उपनिवेश संबंधी।
नियंत्रण	=	नियम से बाँध कर रखना।
शोषण नीति	=	सोखने की नीति, दूसरों के श्रम का अनुचित लाभ उठाने की नीति।

प्रादुर्भाव हुआ	=	प्रकट हुआ।
अपितु	=	बल्कि, किन्तु।
सक्रिय रूप से	=	क्रिया में लगे हुए रूप से।
उत्सर्ग किया	=	त्याग दिया, बलिदान किया।
तत्काल	=	उसी समय, फौरन।
खुल्लमखुल्ला	=	खुल कर सब के सामने, सब को सूचित करते हुए।
तात्कालीन	=	उस समय का।
फूट डालना	=	खण्ड करना, वैर / अनबन करना।
ठप हो गया	=	पूर्णत बन्द हो गया।
बहिष्कार का	=	बाहर निकालने का, दूर करने का, त्याग करने का।
अंतरिम	=	बीच की अवधि का, मध्यवर्ती, अस्थायी।
स्थगित कर दिया	=	रोका दिया।
बाध्य किया	=	पीड़ित किया, मजबूर किया, विवश किया।
इलज़ाम	=	अभियोग, दोषारोपण।

प्रश्न-अभ्यास

1. अंग्रेजों के अधीन रहकर भारतवासियों के मन में उत्पन्न भावों को पठित पाठ के आधार पर लिखिए।
2. भारतवासियों का अंग्रेजों के विरुद्ध किए गए कार्यों का चित्रण कीजिए।

3. स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान शहीद हुए भारतवासियों के नाम लिखिए।
4. अंग्रेजों की दमन नीति के बारे में लिखिए।
5. भारत कब स्वतंत्र हुआ ?
6. भारत के स्वतंत्रता-संग्राम की कहानी संक्षेप में लिखिए।
7. स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान शहीद हुए पाँच देशभक्तों के नाम लिखिए।
8. अपने अध्यापक से पूछ कर पाठ में उल्लिखित देश भक्तों के बारे में पाँच-पाँच वाक्य लिखिए।
9. मणिपुर में आज़ाद हिन्द फ़ौज का स्मारक कहाँ है ?
10. मणिपुर की स्वतंत्रता की रक्षा में शहीद हुए मणिपुर के प्रमुख पाँच देशभक्तों के नाम लिखिए।
11. स्वतंत्रता-संग्राम के प्रमुख दस देश भक्तों के फोटो/चित्र खोजकर एक चित्रमाला तैयार कीजिए और उसे कक्षा में दिखाइए।

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह —

क. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थानों, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।

ख. स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।

ग. भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे।

घ. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।

ङ. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।

च. हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।

छ. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं — रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे।

ज. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।

झ. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।

ञ. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

निर्देश

अध्यापकों को चाहिए कि वे संविधान के भाग ४ क, अनुच्छेद-५१ क में उल्लिखित इन मूल कर्तव्यों को छात्रों को समझाएँ और कण्ठस्थ कराएँ।

राष्ट्रगान

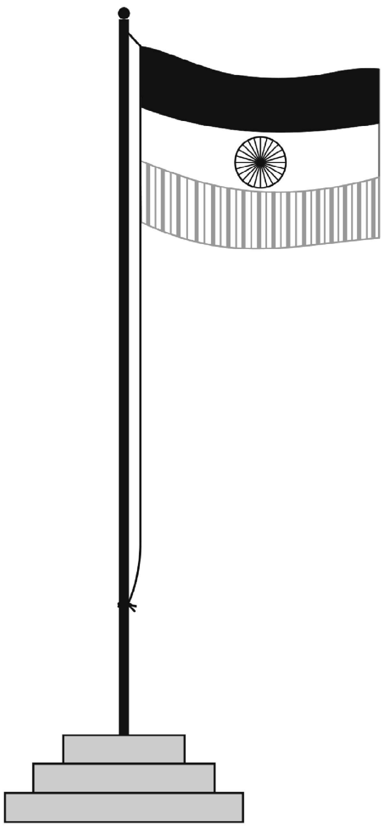

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग,
विंध्य-हिमाचल, जमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।